ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025 ISSN (O)- 3107-9679
Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

एक दृष्टिमे साकेतानंदक कथा साहित्य

चन्देश्वर राम

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मिथिला विश्ववविद्यालय, दरभंगा

डॉ0 राज कुमार राय

सहायक प्राचार्य सह पर्यवेक्षक, मैथिली विभाग, विश्ववेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

साहित्य समाजक सापेक्ष सृजित होइत अछि। मानवक जीवन–यापनक पद्धतिमे समयानुकूलता जेना–जेना परिवर्त्तन होइत छैक, तहिना साहित्यमे सेहो परिवर्त्तन होइत छैक। रचनाकार एहि परविर्त्तन कँ कथ्य, शिल्प आ प्रस्तुतिक माध्यमे अपन रचनामे अभिव्यक्त करैत अछि। एहि परविर्त्तनक अभिव्यक्ति विभिन्न ढ़ंगक परिणाम स्वरूप नव–नव प्रवृत्तिक जन्म होइत छैक।[1]

कथा एकर एकटा विलक्षण दृष्टांत अछि। कथाक रचनाक आधार प्रमुख प्रवृत्तिक होयब अस्वाभाविक नहि होइत अछि। ई सुधारवादी, आदर्शवादी, ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, भावात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, कामपरक, हास्य–व्यंग्य, राजनैतिक, प्रगतिवादी, यथार्थवादी, समाजवादी, जनवादी आदि होइत अछि।

एहि प्रवृति कँ मैथिली साहित्यक मर्मज्ञ कथाकार डॉ. अशोक कुमार मेहता, एखन धरि मैथिलीमे उपलब्ध कथाक आधारपर प्रमुख प्रवृत्तिकँ रेखांकित उपरोक्त रूपँ कयलनि अछि। ओ कथा मादे कहैत छथि–

साहित्य समाजक सापेक्ष सृजित होइत अछि। मानवक जीवन–यापनक पद्धतिमे समयानुकूल जेना–जेना परिवर्त्तन होइत छैक, तहिना साहित्यमे सेहो परिवर्त्तन होइत छैक। रचनाकार एहि परिवर्त्तन कँ कथ्य, शिल्प आ प्रस्तुतिक माध्यमे अपन रचनामे अभिव्यक्त करैत अछि। एहि परिवर्त्तन अभिव्यक्तिक विभिन्न ढ़ंगक परिणाम स्वरूप नव–नव प्रवृत्तिक जन्म होइत छैक। जे ऊपर अंकित कयल गेल अछि।

ई कथा मैथिली साहित्यक सर्वाधिक ओ लोकप्रिय विद्या थिक। कथाक माध्यमसँ मानव जीवनक आह–छोह, नेह–रोह, आशा–आकांक्षा, आदि विभिन्न पक्ष–बड़ सरल ओ सहज रूपँ उतारि अबैत अछि। सुखरू दुख, आ सौख–सेहंता कहबाक सुनबाक सहजता प्रवृत्तिसँ अनुस्यूत कथाक मौखिक परम्परा अत्यंत पुरान अछि। मुदा साहितयिक विधाक रूपमे एकर उदभव चंदा झा द्वारा विद्यापति कृत 'पुरूष परीक्षा' कँ अनुवादसँ मानल जाइत अछि। पछाति, बहुत रास संस्कृत कथा–उपाख्यानक अनुवाद भेल। मौलिक मैथिली कथा लेखन–विगत शताब्दीक पहिल दशकमे प्रारंभ भेल जे अदावश्रि एकटा विशिष्ट विधाक रूपमे स्थापित अछि।[2]

जँ उपरोक्त संदर्भकँ ध्यानमे राखि बात करैत छी तऽ साकेतानंद मैथिली साहित्यक एक एहन कथाकार छथि जे अपन कथा सँ उपयुक्त सम्बन्धित प्रवृतकि कथा लिखबामे सिद्धहस्त छथि। साकेतानंद समृद्ध पारिवारिक पृष्ठभूमिमे रहितहुँ साहित्यिक अभिरूचिक कारणँ विशिष्ट एवं निविष्ट साहित्यकारक कोटिमे प्रतिष्ठित छनि। हिनक महत्वपूर्ण रचनामे 'गणनायक' कथा संग्रह प्रकाशित अछि। एहि पोथी पर भारत सरकारक सर्वोच्य साहितयिक संस्था साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 1999 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल छनि। एकर अनुवाद राजस्थानी भाषा मे भेल आ ओइ पर साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार देल छनि जे साकेतानंदक ओ हुनकर साहित्यक गुणवत्ताक प्रमाण स्वतरू सिद्ध अछि। एकर अतिरिक्त हुनक कथा परिवेशक क्षमताक प्रमाण

सेहो स्वतरू सिद्ध अछि। ओ स्वयं लिखैत छथिदृ

"हमर लेखन पर कोनो एक गोटाक प्रभाव नहि। मैथिली, हिन्दी, बंगला आ अंग्रेजीक ओहन सब लेखक जे मनुष्यक दिशा आ दशाक वर्णन कयलनि अछि आ जिनकर रचना पढ़ैक अवसर लागल। हमर मोनमे कोनो संवेदनाक अबिते जे चित्त बनैत अछि, ओकरा अनुभव कऽ कौखन शब्दक माध्यम सँ उकेरबाक लय बाध्य होइ छी। मुदा, कखनहुँ शब्दक सीमाक मान भेला संता कलम छोड़ि कैमरा उठा लैत छी। कलम आ कैमरा– यैह दुनू ककरादिक बीचमे पेंडुलम बनल हम डोलैत रहैत छी।"[३]

साकेतानंदक इएह उक्ति हुनका महान बनबैत अछि आ निछच्छ गाम घरक, गरीब–धनीक समाज सँ तादात्म जोड़बाक कला सँ अभिप्रेरित करबाक गुण सँ प्रदर्शित करैत अछि।

सामाजिक जीवनमे प्रत्येक व्यक्ति पात्र नहि होइत अछि। भऽ सकैत अछि प्रत्येक व्यक्ति, व्यक्तित्व। मुदा भऽ नहि पबैत अछि। होइत अछि ओ जे जान–अंजान अपन क्रिया– कलाप सँ कोनो प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष दायित्व अथवा घटित घटनाक कारक वा परिणाम प्रमुख बनि जाइत अछि। ओ बनयबामे निर्णायक होइत अछि ओकर चरित्र, जे समाज कैँ प्रभावित करैत अछि आ गुण–दोषक आधार पर ओ व्यक्ति विशेष उपाय वा कुपाय बुझल जाइत अछि। जैंकि साहित्यक सम्बंध समाज सँ छैक आ समाजेक लेल होइत अछि तैं साहित्यमे रचनाकारक अपन कथा वस्तु अनुरूप सामाजिक मान्यता प्राप्त 'स' आ 'कु' पात्र कैँ ग्रहण करैत अछि, आ ग्रहण करैत आबि रहल अछि।[४]

साकेतानंदक कथा सभमे पात्र सेहो निम्न, मध्यम सँ अति मध्यम वर्ग धरि पात्र कथा नायक, नायिका, खलनायक बनल अछि। हिनक पात्र अपन सामाजिक सरोकार, संस्कार वा वर्ग–संप्रदाय सँ मुक्त नहि अछि। मुदा ओकरा कथानुरूप चरित्र संस्कारोपयुक्त भेल अछि। ओकर असली चरित्र विकसित भऽ सकल सोझा आयल अछि।

कथावार बात करी तऽ 'उपक्रम' केर कथामे एक दिस 'मिस्टर वर्मा' खलनायकक पात्रक रूपमे प्रस्तुत भेल अछि तऽ दोसर दिस 'कामाख्या' नायकक रूपमे। दुनूमे शासक, शोषक ओ शोषितक सम्बंध उजागर भेल अछि। 'आलुक बीजा' मे बीडीओ, दारोगा राम रक्षा सिंह क्रुर प्रशासक रूपमे तऽ जयमंगल मुख्य समाज सुधारक ओ गरीब–गुरबा लेल संघर्ष करऽ वला उत्तम व्यक्तित्व वाला चरित्र। तहिना मौलाना रहमतुल्ला, रामशरण, सगुनियाँ आदिक भूमिका प्रशंसनीय। 'कचोट' मे घोष बाबू, मासी माँ आ मोनी सहयोगी पात्र छथि तऽ दोसर दिस बौआ झा लाभऽ लऽ वास्तविकता सँ मुँह मोड़ि लिबऽ वाला। तकर कचोट हुनका रहियै गेलनि। एहन चरित्र सभ सँ भरल–पुरल अछि कथाक पात्र। मालिक आ बंधुआ मजदूरक प्रवृत्ति लऽ कऽ जे कथा अछि 'एक डेग आगू', एहिमे राम जी एक एहन पात्र छथि जे अपन स्व जागि गेला पर उचित न्याय लऽक अपन कर्तव्य पालन कयलनि। ओहिठाम बड़का मालिक एक घृणात्मक प्रवृत्ति वाला व्यक्तित्व उजागर भेल छथि। आब तऽ पकड़ विवाह नहि होइत अछि, मुदा एकटा दौर छल जतऽ दहेजकैँ केन्द्रमे राखि बहुत जोर सँ पकड़ विवाह केर चलनि आरंभ भऽ गेल छल। एहि पकड़ विवाहमे पीड़ति पात्र जीवेन्द्रक समेट अछि तऽ दोसर दिस गुंडा अर्थात् खलनायकक भूमिकामे छथि रामचन्दर आ झोरावाला व्यक्ति।

एहि तरहक पात्र आ चरित्र कैँ साकेतानंद आनो आन कथा सभमे विभिन्न रूपैँ गुण–दोष निरूपित कयलनि अछि जे कथा साहित्यक लेल उपयोगी दृष्टि गोचर होइत अछि। एतबा अवश्य अछि जे साकेतानंदक कथा सभमे भावनात्मक कथा प्रवृति विशेषतरू पाओल जाइत अछि। गणनायक मात्र एकटा कथा 'मचकल खुट्टा' मे एक आध ठाम काम परक प्रवृत्ति उजागर भेल अछि जे कजरैली वाली आ पचा केर मध्य दरवार भेल अछि। एकर बादो हिनका कथा सभमे साम्यवाद मुखर भेल अछि। कुसमानताक विरूद्ध लड़ाइ भेल अछि। एकटा संगहि साकेतानंदक कथा सभमे उल्लास, विनोद, मौज मस्ती, गरीबी, नैह–रहितो सुखात्मक क्षणक वर्णन पात्र ओ चरित्रक माध्यमे भेल अछि तऽ कतौ आक्रोश, घृणा, पीड़ा, दुरूखात्मक स्थिति, समाज–वर्णन, स्थित–परिस्थतिक अभिव्यक्ति भेल अछि। मुदा मुख्य रूप सँ शोषित, जन, बोनिहार, कर्मचारी, किसान, नारी आ मानव समुदाय हित–चिन्तन अछि तऽ समाजक विभिन्न समस्या दुरूख–दैन्य युक्त सामाजिक चेतनाक वास्तविक हुबहु भाव प्रस्फुटित पात्र ओ चरित्रक माध्यमे भेल अछि।

जन शब्दक अर्थ होइत अछिदृ अनेक। मुदा अभीष्ट अर्थ अछि समाजमे रहऽवला 'सामान्य लोक'। सामान्य लोक सँ अभिप्राय अछि एहन लोक जे कोनो गाम अथवा शहरक सुसंस्कृत, परिष्कृत अथवा रूचि सम्पन्न लोकक अपेक्षा बेसी सरल एवं सहज जीवन बितबैत अछि। एहि समूहक लोक सामाजिक, आर्थिक रूपेँ उपेक्षित रहतै अछि। एहि वर्गकेँ दलित, शोषित, पीड़ति अथवा पिछड़ल संज्ञा सँ अभिहीत कएल जाइत अछि।[५]

साहित्यमे जनवादी विचारधाराक मूलमे इएह 'जन' शब्द अछि। आ तै जनवादी साहित्यमे जन–सामान्य केँ विशेष महत्ता प्रदान कएल जाइत रहल अछि। प्रत्येक साहित्य जन–साहित्य नहि भऽ सकैत अछि। जन–साहित्य बनबाक लेल रहन–सहन, आहार–व्यवहार, सुख–दुरूख, सौख–सेहंता, ओकर नीक–बेजाय, क्रिया–कलाप, उत्थान–पतन आदि संज्ञान लेब अनिवार्य मानल जाइत अछि।[६]

साकेतानंदक कथा साहित्य सेहो जन–साहित्य थिक। हिनकर कथामे गामक दलित, पीड़ति–शोषित, पिछड़ल ओ पछुआयल लोकक आत्माक संवेदना सँ भरल रहैत छनि हुनक दर्द भोगल रहतै छनि। तैं हुनकर जतेक कथा साहिय अछि अनिवार्य रूपेँ जनवादी। कने विचार करी तऽ 'उपक्रम' मे फैक्ट्रीक वर्णन अछि, एहिठाम फैक्ट्री मे कार्यरत निछच्छ ग्रामीण परिवेशमे रहऽवला जनजीवन व्याप्त अछि, 'आलूक बीया' मे जन–जीवनक भीड़। जुलुस। गाम–घरक परिवेश। ब्लॉकमे प्रदर्शन। लाठी चार्ज। गोली चार्ज। गाम घरक जनजीवन त्रस्त। अस्त–व्यस्त। अपन हक हकूक लेल जे प्रदर्शन। सामाजिक ओ सरकारी व्यवस्था सँ लैश जनजीवन। एहिमे जनवादी विचार केन्द्रमे रखलनि अछि कथाकार। 'एक डेग आगू' मे इएह जन–जीवन प्रमुख। एकदम गाम–घरक परिवेश। करिया गायक थन सँ दूध–दहीक दृश्य गड़बियो बेटीक बिआहक दर्द। दोसर बड़का मारिपकक दबंगइ। फुहर स्वर। सभ जन–जीवन सँ ओतप्रोत। एहन सन परिदृश्य साकेतानंदक सभ कथामे भरपुर रूपेँ भेटैत अछि। हिनकर कथा सभमे गामक दलित, पीड़ति, शोषित, पछिड़ल ओ पछुआएल लोकक आत्माक संवेदना सँ भरल रहैत छनि। हुनक दर्द भोगल रहैत छनि। तैं ई कहबामे आश्चर्य नहि जे साकेतानंदक सभ कथा साहित्य अछि। आ से साहित्य अनिवार्य रूपेँ जनवादी साहित्य।

संवाद कथा साहित्यक एक गोट गौण तत्व अछि। एहि सँ कथामे रोचकता ओ सजीवता अबैत अछि। पात्रक चरित्रहुकमे संवाद सहायक होइत अछि। संवादक दृष्टिकोण, आदर्श ओ उद्देश्यक परिचय होइत छैक। एहि सँ कथाक घटनामे गत्यात्मकता अबैत छैक तथा भाषा शैलीक सेहो निर्माण होइत छैक। अनुकूल समय ओ परिस्थितिमे संवाद योजना कथाकेँ पूर्ण आलोकित कऽ दैत अछि। वस्तुतरू ई कथाकारक तकनीक होइत अछि जे वस्तुकेँ बढ़बैत अछि, पात्रक संग कथा रसिक केँ सहज सम्पर्क बनबैत अछि आ अंततरू ओकर अनुभूति सहज अभिव्यंजनामे सहायक होइत अछि। संवाद स्वाभाविक तत्काल ओ पात्रक चरित्र, स्तर तथा पारिस्थिक अनुकूल भेला पर कथानक ओ चरित्रक मध्य कड़ीक काज करैत अछि। एहि सँ कथामे उत्सुकता, जीवन्तता ओ प्रभाविनी होइत छैक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्यमे साकेतानंदक कथा सभ उपयुक्त सभ गुणक अनुपालन सहजहि करैत देखाइ पड़ैत अछि। एहि ठाम विस्तार हेबाक भयसँ मात्र दू–तीनटा कथाक दृष्टांत देल जा सकैत अछि। ई संवाद स्वतरू स्पष्ट करैत अछि जे साकेतानंदक कथामे जे संवाद–संप्रेशणीयता भेल अछि जे कतेक छोट आ सहज रूपेँ भेल अछि। एहिमे सहजता, सरलता आ वास्तविकता जमीनी बुझना जाइत अछि। इहो कहब आवश्यक अछि जे भाषा प्रयोगमे लेखक सामान्य बोली बानीमे बतिआइत जेँ बुझाइत छथि तऽ ओ सहजहि पाठक के प्रभावित करैत अछि।

आ से साकेतानंदक सभ कथामे ई गुण भेटैत अछि। एहि ठाम एक कथाक संवाद द्रष्टव्यदृ

ष्हमरामे? आश्चर्य, हम तश् एक टा महज–मामूली लोक छी। निम्न मध्यमवर्गक साधारण लोक। प्रेस एयरकंडीशनक पाइ देलक अछि तैं जा रहल छी। नै तश् अपन पाइ सँश अहि डिब्बा मे चढ़बो हमरा लय असंभव अछि।

बुझलहुं–बुझलहुं। अहां एकदम साधारण लोक छी। मुदा ई कहू जे पाइ रहने सुख–शांति भेटै छैक? पाइ त' हमरा बच्चे सश् रहल अछि। मुदा शांति ? कहियो नहि। अहां तश कहै छी जे अहां के पाइ नहि अछि तश् की अहां के शांति अछि?

ष्शांति मोनमे होइ छै। पाइ रहै आ कि बिनु पाइ, लोक यदि चाहे तश् कोनो वस्तु एहन नहि छैक जकर बिनु रहल नहि होइक। हं, कने स्वार्थी, कने भाग्यवादी बनश पड़ि सकैत अछि।

स्वार्थ आ भाग्यक शांतिमे कोन काज?

ष्बस अपनहि टा लय शांति ताकब स्वार्थ कहाओत। अपनहि टा लय शांतिक खोज करब स्वार्थ नहि भेलै ? दुनियामे संग—समाज सब छैक। मनुक्ख आ जानवरमे यैह फरक ने छै जे मनुष्य सोचि सकैत अछि, ओकरा अनुभव करबाक सामर्थ छैक। मानि लिय जे अहां के सुख—शांति अछि मुदा बाल—बच्चा, संग—समाज ज' अशांत अछि, त' अहूंक शांति नहि रहत। फेर ओकर शांतिक खोज के करतै, क्यो विलायत सश् एत्तै की?

विलायत स' नहि एतै। लेकिन जँ हमरा लग नहि अछि तकरा हम बिलहबै कोना क'? आ से नहि करबै तश् स्वार्थी कहायब?

'हमरा नजरि मे।

'आ भाग्यक भरोसे रहला स' ... ?

जे किछु नहि भेटल तकरा भाग्य मानि लेला सँश शांति भेटि सकैत अछि। इच्छिते वस्तु नहि प्राप्त भेला सँश ने लोक अशांत होइत अछि?

हमरा नै लगैत अछि जे अहि दुनियामे कत्तौ शांति छैक। बिनु ई दुनिया छोड़ने शांति कतश भेटतै यौ ? ई गप्प ओ एकटा दीर्घ निःश्वास लैत बाजलि। फेर एकटा दीर्घ अन्तराल, गलामे अटकल ठंढ़ा ठोस सन। बड़ी काल धरि डिब्बा निःशब्द। बड़ी काल धरि हम मूड़ी गोतने सोचौत रहलहुं जे ठीके एहि दुनियामे शांति कतश छैक, ककरा छैक? हमरा कि हमर सामने बैसलि लाखोंक स्वामिनी कँ कि हमर गामक बेचू सदाकँ जकरा कि बसो बास नहि छैक? ककरा छै?

मम्मी बनारसमे रहै छथि। सुनैत छियनि आब ओहू आर्टिस्ट सश् नहि बनै छनि।

चिट्ठी—पत्री होइये कि नहि।

कथा साहित्यमे भाषा—शैलीक महत्व असीमित होइत अछि। कथाके सुन्दरतम शृंखलाबद्ध ओ चमत्कारपूर्ण ढ़ंगसँ प्रस्तुत करबाक सामर्थ्य पाठकक अनुरंजन, ओकर ह्रदय संवेदनाक जागरण, सरलता, सुबोधता, सासता, प्रवाहपूर्णता आदि नीक कथाक समस्त गुणक साधन कथाक भाषा होइत छैक। कथाक माध्यम सँ गूढ़—सँ—गूढ़ भावना ओ सूक्ष्माति सूक्ष्म अनुभूति कँ अभिव्यक्त कयल जाइत अछि। ई अभिव्यंजना कथाक भाषा ओ ओकरा नीक जकाॅ सजयबाक भंगिमा पर निर्भर करैत छैक। भाषाक सजीवता ओ सशक्तियत कथामे गति उत्पन्न करैत छैक। एकर धारावाहिकता आओर सुरम्यक निर्वाहमे होइत छैक।

कथामे भाषाक महत्व सर्वोपरि एहि हेतुए भऽ जाइत अछि जे ई एकर समस्त तत्वय संवाहक होइत छैक। पात्र, घटना, संवाद, परिवेश ओ उद्देश्य सभक अभिव्यक्ति साधन होइत कथाक भाषा तैं एकर प्राञ्जलता ओ बोधगम्यता सम्पूर्णतामे प्रभाक्ति करैत छैक।

साकेतानंदक कथामे सभ तरहक स्वाद भेटैत अछि। हिनकर कथामे निछच्छ देहाती आ बोली बानी वाला भाषा वा ग्राम्य भाषाक प्रयोग प्रचुरता कँ रूपँ देखल जाइत अछि। हुनकर भाषा युद्ध कऽ क्षेत्रीय—पारिवारिक—सामाजिक प्रयोग तऽ अछिए संगहि विजातीय भाषाक प्रयोग सेहो ठाम—ठाम देखल जाइत अछि। हिनकर लिखल कथामे ई गुण भेटैत अछि जे अल्पशिक्षित लोकनि सेहो हिनकर कथा पढ़ि कऽ रसास्वादन कऽ लैत अछि। जे पाठक हिनकर कथा पढ़व ओ कयलनि तऽ बिनु अंत कयने छोड़ैत नहि छथि। एकहि साॅसमे कही तऽ कोनो अतियुक्त नहि। कतौ—कतौ साकेतानंद भाषा प्रयोगमे उपमा—अलंकार आदिक प्रयोग सेहो कयने छथि। किछु दृष्टांत देव समुचित होयत

जे ना पहिल बरखामे मांटिक सोन्ह गंध पसरैत अछि तहिना गर्र—गर्र गों—गोंक स्वर वातावरणमे पसरि रहल अछि। सोझामे उछलैत सिलेबिया बाछी माइक दूध पिबै लय आफन तोड़ने। सूर्य, सोहिजनक कल्ला उठौने गाछक दोग देने सरसरायल उपर माथे चल जाइत। आंगनमे उक्खरि—समांठक धम्म—धम, फेर धम्म आ ताहि संगे मोलहीक रेड़ियेनाइ!... आब तश बाछियो रंभा रहल छैक। रामजी अपन दुनू ठेहुनक बीचमे दाबल कटिया सोझ करैत अछि आ अपन करिया गायके कहैत छै— ष्आइयो त' संच रह नढ़ी, कुकुरमांछी कटै छनि। बेर—बखत कुछो ने बुझती। पाहुन—पड़क तक नहि। 'आ कारी गायक थन सश दूधक श्वेत धार कटियामे भरैत रहल। तीक्ष्ण धार बनि कटियामे खसैत दूधक गर्र—गों वातावरणमे पसरैत रहल। रामजीक दिन शुरू भ' गेलै गामक एकटा दिन शुरू भेलै। अप्रेलक तिखगर, साफ आ धोआयल दिन रामजीक कटिया भरि रहल छैक। ओ बाछी के खोलि

दै छैक। आ बाछी निमिष भरि लय ठमकि जाइत अछि। जेना ओ बंधन–मुक्त भ' गेल अछि तकर विश्वास नहि भेल होइक, आ फेर एक्के फलांगमे मायक थनमे हुदुक्का मारिकँ 'दूध पीबश लगैछ। भरल कटिया सश समशीतोष्ण दूधक फेन बतासा बनिकश कटियाक कान पर लटकि रहल अछि। रामजी अपन करिया गाय आ ओकर दूधकँ जनैत अछि। तैं ई नीक जकां बूझल छैक जे बाबू–भैया किएक ओकर दूध लय जान दइ जाइ छथिन। ओ गिरहथ अछि, छोट–छीन गिरहथ, कोनो पैकार नहि। गिरहथक अपन मर्यादा होइ छै। से ओकरा सतत मोन रहै है। सतत मोन इहो रहैत छैक जे ओ करियाके कोना पोसलक, कथी लय पोसने छल? कत्तेक जड़काला आ भदवारिक झपसी ओ करियाक पांजर लागि कश बितौलक से की जानय गेलै लोक! लोक तश एकर शुद्ध कारी रंग देखै छै आ छौ टिप्पा स्वदगर दूध के निहारै है। कोना ई दिन दिनकर–दीनानाथ देखौलथिन से कतश सश जनलकै क्यो। सोचने रहय, करिया के दुधगरि होइते गुलबियो बियाहै जोगर भश जेतै। बीचमे एकटा बाछा बेचने रहय। तकरो किछु टका छैक। कोनो कुठाममे करिया के बेच कश गुलबियाक हाथ कोनो सुपात्रक हाथ मे पकड़ा कश ओ शनिसांस लेत। मुदा ई सब सोचल–विचारल बात कहिया भेलैक जे आइ होइतै? बुढ़बाक बेमारी सब किछु गड़बड़ा देलकै। झुठो स' मालिकक तीन सौ टाका कर्ज भ'।

लोकगीत, लोककथा ओ लोक नाट्यक अतिरिक्त मिथिला अन्य विविध तरहक साहित्य उपलब्ध अछि, जकर मूल्य संभवतः साहित्यक कोनो अन्य विधा सँ कम नहि अछि। सभास शैली मे प्रणीत ई एहन वाङ्मय अछि, जे मिथिलावासी सभक उदात्त परिकल्पना सभक अतिरिक्त हुनक मृदुल भाव भूमिक सुंदर परिचायक अछि। जेना मोहावरा, उक्तिओ फकड़ा।

मोहावरा एक ऐहन अपूर्ण वाक्यांश अछि, जकर सहायता सँ वाक्य अथवा भाषाकँ चुस्त आ प्रभावपूर्ण बनाओल जा सकैत अछि। जाहि भाषा अथवा बोलीमे एकर प्रयोग होइत अछि, ओहिमे वस्तुतरू एक विशिष्ट आकर्षण आबि जाइत अछि। ई एतेक चुभऽवला एवं मर्मस्पर्शी होइत अछि जे श्रोताकँ हृदय पर सोझे चोट करैत अछि। वर्षों वर्षक अनुभवकँ आत्मसात करऽवला एहि मोहावरा सभक प्रयोग सँ भाषामे एक अजीब चटपटापन आबि जाइत अछि।

संसारमे मनुष्य अपन लोक व्यवहारमे जाहि–जाहि वस्तु सभ आ विचार सभकँ बड्ड उत्सुकता सँ देखलनि आ सफलनि–बुझल आ बेर–बेर ओकर अनुभव कयलनि, ओकर शब्दमे बान्हि देलक अछि। ओएह मोहावरा कहबैत अछि।

दैनंदिन जीवनक व्यवहार, विचार आ व्यापारकँ मोहाबराक निर्णायक तत्व कहल जा सकैत अछि।

मोहावरा शब्द मूलतरू अरबी भाषाक अछि, जकर अर्थ 'बातचीत घरब' होइत अछि, मुदा हिन्दी मैथिली एहि शब्दकँ एकनव अर्थ प्रदान केलक अछि। मोहावरा आब बात–चीत के लेल नहि, अपितु एक वाक्यखंडक लेल प्रयुक्त होइत छथिदृ एक एहन वाक्यखंडक लेल जे अपन सामान्य अर्थकँ छोड़िएक विशेष अर्थ ग्रहण कऽ लैत अछि आ अपन उपस्थिति सँ भाषामे विशिष्टता प्रदान कऽ दैत अछि। मोहावरा सँ युक्त भाषा टफसाली आ सहज ग्राह्य बनजिाइत अछि।

एहिठाम, मोहावरा, किछु दृष्टान्त देव आवश्यक लगैत अछि'

मोहावरा–

उनका चूड़ा पर पानि हेरेनाइ, केस कट्टी बन्द हयब, कोबराक बऽर जकॉ डेग देब, गिरह बान्हब, गीदड़ चुकब, अंग फरकब, गिरगिट नाचव, लंका कांड, खर जितिया केनाइ, डांड बान्ह करबा, अन्हार घरक इजोत, भेरिया असान, ढोल पीटब, अपनहि पयरमे कुलहारी मारब,।

एतावता साकेतानंदक कथा साहित्य अपन साहित्यिक भाव–भंगिमा सँ युक्त अछि–

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the

subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. तात्पर्य, डॉ. अशोक कुमार मेहता, जखन–तखन, 2004, पृष्ठ– 21
2. वएह, पृष्ठ– 2...
3. गणनायकः साकेतानंद, शिखा प्रकाशन, तिवारी सदन, श्रीकृष्ण नगर, पटना– 1, वर्ष 1997, ‘लैप.
4. मैथिली कथा साहित्य मे पात्र ओ चरित्र, मैथिली कथाक विकास, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 2003, पृष्ठ– ५३ आलेख– डॉ. फूलचन्द्र मिश्र रमण
5. तात्पर्यः अशोक कुमार महतो, जखन–तखन, 2004, पृष्ठ– २०
6. वएह, पृष्ठ– 64

Cite this Article

"चन्देश्वर राम, डॉ0 राज कुमार राय', "एक दृष्टिमे साकेतानंदक कथा साहित्य", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

Journal URL- https://www.researchprojournal.com/

DOI- 10.70650/rpimj.2025v1i200004